खगोल शास्त्र - "चमत्कारिक कथाओ से आधुनिक विज्ञान तक"

किसी सुहावनी संध्या को बाहर निकलिए और आसमान में चमचमाते सितारों का अवलोकन कीजिए। जैसे ही आप उन सितारों के शानदार नजारों के नीचे खड़े होते हैं, आप अपने आप अनेक अचरज भरे सवालों के घेरे में बंध जाते हैं। इन सितारों में इतनी अलौकिक चमक कहां से आती है ? इनका "उदय-अस्त" रात्रि के दरम्यान ही क्यों होता है ? ये सितारे दिन में कहां खो जाते हैं ? जिस क्षण ये सारे प्रश्न आपके मस्तिष्क में कौंध रहे होते हैं, निश्चयही आप उस क्षण खगोलशास्त्र (Astronomy) की दुनिया में कदम रख रहे होते हैं। खगोलशास्त्र - स्वर्ग का विज्ञान। अंतरिक्ष

" Astronomy " शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों - " Astron " और " nomos " से उद्भूत है। " Astron " का अर्थ " star " माने तारा या सितारा होता है। " Nomos " का अर्थ " Law " अर्थात "नियम" होता है। " Astronomy " (खगोलशास्त्र) पृथ्वी के बाह्य संसृति तथा उससे संलग्न वातावरण में समाहित समस्त तत्वों का वैज्ञानिक अध्ययन है। जिसमें सूर्य, चंद्र ग्रहपुंज, तारामंडल, मंदाकिनियां, इसी प्रकारके अन्य अनेक सितारों के नियमन तथा ब्रम्हांड शामिल है, और ब्रम्हांड के उद्भव से लेकर सितारों के विनाश तक की परिसीमाओं की शोध है। खगोलशास्त्र को एक संस्था के रूप में तीन मूल विभागों में विभाजित किया जा सकता है। वेधशालीय खगोलशास्त्र , सैद्धांतिक (शास्त्रीय) खगोलशास्त्र और प्रयोगशालीय खगोलशास्त्र। खगोलशास्त्र (Astronomy) ज्योतिषशास्त्र (Astrology) से बिल्कुल भिन्न है क्योंकि ज्योतिषविद्या का कोई वैज्ञानिक आधार नही है।

मनुष्य घटित वस्तु को समझने और जानने की कोशिश हमेशा से करता आ रहा है। आज मानव के पास उसके आसपास की दुनिया में घटने-वाली घटनाओं तथा उनके संबंधित गूढ प्रश्नों का व्यवहारिक तथा वैज्ञानिक उत्तर है। पर, जरा उस आदिम मानव के बारे में विचार करें - जिसके "शब्दकोश" मे "विज्ञान" नामका कोई शब्द ही नहीं था। वह एक ऐसी दुनिया में रहता था जो उसकी समझ के बाहर थी।

संसार के गूढ प्रश्नों तथा तत्वों को विश्लेषित करने की मनुष्य की इच्छा ने ही " Mythology " को जन्म दिया। उसने सूर्य, चंद्र, तथा तारागण के बारे में कथाओं का आविष्कार किया कि वे क्यों प्रगतित होते हैं और फिर क्यों आकाश में ओझल हो जाते हैं ? उसने उन तमाम विषयों मे कहानियां गढ़ी जो उसे बेहद परेशान करती थीं। Myths (चमत्कारीक कथाएं), प्रकृति के रहस्यमय घटनाओं तथा कोई खास विश्वास , किसी समाज के रिती-रिवाज एवं प्रथाओं की व्याख्या करने का एक प्रयास है। Myths समस्त मानवीय परम्पराओं तथा

उनके समाज में व्याप्त थी, और वह मानवीय सभ्यता का एक आधारभूत अंश बन चुकी है. Myths प्रमाणिकता का एक अव्यक्त लेखाजोखा है, जो व्याख्यायित न होते हुये भी एक सच्चाई है. वे उन घटनाओं से तथा उन विषयों की अवस्थाओं से संबंधित हैं जो सामान्य मानवीय दुनियासे परे हैं. और फिर भी उस दुनिया के मूलाधार हैं. Myths अपनी सीमाओं के प्रति बहुत ही कम जागरूक हैं जिनके अंतरगत उनकी आस्थाये (विश्वास) प्रामाणिक कही जा सकती हैं.

"Science" (विज्ञान) शब्द लाटिन शब्द "Scientia" से उद्भूत है, जिसका अर्थ ज्ञान (Knowldge) होता है. "विज्ञान ऐसी व्याख्या प्रस्तुत करता है जो प्रत्यक्षत: पद्धतिसर प्रामाणिक साक्ष्य पर आधारित होता है. विज्ञान की इतिवृति अत्यंत प्राचीन है. उसकी जड़ें मान समाज के उद्भव तथा उसकी संस्कृति तक जा पहुंची हैं. आधुनिक संस्कृति के प्रारंभ से भी बहुत पहले मनुष्य अपने आवातावरण के बारे में विश्वास पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर चुका था. खगोलशास्त्र के क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वैज्ञानिक की दखल ने मनुष्य के उन विश्वासों और विचारों मे क्रांति ला दी, जो आदिम काल में पौराणिक कथाओं और अंधविश्वासों से जकड़े हुए थे. विज्ञान ने अंध-विश्वासों और रुढ़िगत प्रथाओंकी धज्जियाँ उड़ादी और संसार में मनुष्य के अस्तित्व की विचार धारा की दिशा ही बदलकर रख दी.

जैसे -जैसे पृथ्वीपर मानवीय साम्राज्य फैलते गये वैसे-वैसे मानव की क्रिया कलाओं को संगठित करने तथा उनपर अंकुश रखने की जरूरत भी बढ़ती गई. अवकाशीय पिंड (celestial object) ही वह माध्यम था जिसके द्वारा प्रमुख सरदार जनबल को काबू में रख सकते थे. मानवीने एक "ईश्वर" जैसी शक्ती से अपने आपको नियंत्रित होता हुआ पाया जो अवकाशीय पिंडो को भी नियंत्रित करती थी. आदिम मानव यह विश्वास करता था की पृथ्वी चपटी और स्थिर है. तथा ब्रम्हांड के बीचोबीच है. मानव सभी मापतोल का आधार था. एक मानवीय दृष्टिकोण जो मानव को ब्रम्हांड के बीचोबीच स्थापित करता था. तथ संबंधित तत्वो को मानवीय मापसे अलौकिक घटनाएँ जैसे ग्रहण तथा पुच्छलतारा पारलौकिक अप्रसन्नता के द्योतक माने जाते थे. चीनी शास्त्रियों मानते थे कि ग्रहण एक विभुषि राक्षस सुर्य और चंद्र को खा जाता है, और पुच्छलतारा भयानक आफत और विपत्ति का कारण माना जाता था.

ज्यों ज्यों मनुष्य का ज्ञान बढता गया, ईश्वर के बारें मे उसकी विचार-धारा बदलती गई और उन्नत होती गई. हम पौराणिक देव और दानवों को पारलौकिक मानने के अभ्यस्त हो गये हैं. परंतु वास्तव में उस शब्द प्रयोगों का कोई औचित्य नही है. कोई संस्कृति अपने पौराणिक स्तर पर आधुनिक अर्थ से प्राकृतिक नियमन का विचार नहीं रखती. इसिलिए कुछ भी पारलौकिक नही है. आज इस विज्ञान के युग में हम यह कह सकते है कि देव और दानव दर असल

महामानव के रूप है। वे , वे सभी कुछ कर सकते है जो सामान्य मानव नही कर सकता। मानव पर ईश्वर की यही महामहिमत्व ने प्रत्येक संस्कृति में मिथस् (myths) की परंपरा को उन्नत करने के लिए लोगों को प्रेरित किया, साथ -साथ अन्य अनेक प्राचीन साहित्यिक रूपों जैसे कि पौराणिक कथाएँ और परी-कथाएं।

खगोलशास्त्र कतिपय औचित्य के साथ प्राचीनतम विज्ञान और किसी वस्तुका पद्धतिसर अध्ययन करने का दावा कर सकता है। जब मानव सभ्यता की ओर डगमगाते कदमों से अग्रसर हो रहा था, जब वह घुमक्कड़ शिकारी जीवन को धीरे धीरे त्याग कर कुटकों के रूप में बस्तियाँ बनाने लग पड़ा था उसी समय यह शास्त्र भी फलने फूलने लगा था।

हमारे अर्वाचीन युग में एक पुराण शास्त्र (mythology) अत्यंत गहरे जड़ जमा चुकी है। वह है "ग्रीक माइथोलोजी"। पूर्व ग्रीक के लिए, प्रकृति का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी चमत्कार से संलग्न है। प्रत्येक पर्वत , प्रत्येक वृक्ष, हरेक प्रस्तरखंड, हरेक झरना, हरेक जलाशय, अपना अपना चमत्कारिक रूप रखते थे। जो न केवल बुद्धिजन्य थे बल्कि कमोबेश मानवीय स्वरूप के आधारपर निर्मित थे। रोम की "माइथोलोजी" उधार ली गई माइथोलोजी है। जब रोम ने ग्रीस को जीत लिया, तो रोमनो ने ग्रीक देवताओं को भी अपना लिया। उन लोगोने उनके अनेक देवी-देवताओं के नाम बदले और बहुतों को रोमन देवी-देवताओं की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। रोमन व्यवहार कुशल लोग थे। परंतु जाज्वल्य दुनिया के भव्य प्रभा मंडलीय ग्रीक देवों की उत्तुंग परिकल्पना उनके वश के परे की बात बन कर रह गई। यह आश्चर्य की बात है कि हमने ग्रहों के नामकरण करते समय रोमन नामों को ही चयन किया और ग्रीक के मौलिक नामों को त्याग दिया।

युगों तक रात्रिके अंधकार युक्त आकाश में टिमटिमाते सितारों को लेकर धरती के हर वरवाटे हैं, नाविक तथा मरुभूमि की विभिन्न खानाबदोश जातियों ने अनेक कथाएँ एवं किस्से गढ़े। प्राचीन लोगों की नजरों मे इन सितारों के समूहों ने देवी और देवों, शूरवीरों तथा वीरांगनाओं एवं पशुओं और पक्षियों के अनेक स्वरूपों को धारण कर लिया। उन पुरातन पुरुषो द्वारा रचित इन पौराणिक चित्रात्मक आकाशीय पुस्तक को पढ़ने के लिये जीवन कल्पना कि आवश्यकता होती है, जो हमारे पुरातन पुरुषो के पास थी। पौराणिक साहित्य दंत कथाओं और चमत्कारिक घटनाओं से भरा पड़ा है। प्राचीन मानव जो कुछ आकाश में देखा, समझा बुझा, इसी को आधार मानकर उसने दंतकथाओं और मिथस् की रचना की। उदाहरणार्थ, मृग, श्रवण, त्रिशंकु, ध्रुव इत्यादि की कथाएँ प्रचलित हैं। यही कथाएँ अन्ततः नक्षत्रों में परिवर्तित हो गई। चंद्रकलाएँ भी पुरातन मानवोंपर महत्वपूर्ण असर छोडती गई। उन्होंने चंद्रकलाओं और मौसमों के बीच के संबंधो की कल्पना की

हजारो वर्षों से मनुष्य ताराकुंजो के मध्य परिचित बातों की रूपरेखा

..४..

तैयार करता आया है। यह रूपरेखा रात्रिके अंधकाश में नक्षत्र (constellations कहलाता है। लाटिन भाषा में जिसका अर्थ है "साथ साथ" एक साथ " (together) तथा सितारे (stars) नक्षत्रों मानव को अतीत में वहाँ ले जाता है जहाँ खगोलविद्या का प्रभातकाल सुरु होता है। उनके सितारों संबंधी रूपरेखा जो आदिम मानवो द्वारा चित्रित हैं, आदिम मिथोलोजी में एक अवशेष के रूप में अंकित हैं। परंतु इसी रूप में वे असाधारण अभिरुचि भी पैदा करती है।

बहुत सारे नक्षत्रो के नाम अतिप्राचीन है 3000 वर्ष पूर्व मेसोपोटामिया के सुमेरियन चरवा है और कृषक इनको सिंह, कन्या, वृश्चिक, और अनेक अन्य नामों से पुकारा करते थे। ग्रीको ने भी नक्षत्रों के लिए अनेक शूरवीरों तथा महामानव को शामिल किए। नक्षत्रों के नामावली जिन्हें ग्रीक लोगों ने प्रयोग किया उसका अनुवाद लाटिन भाषा में किया गया। आज भी कार्यालयीन भाषा में नक्षत्रो के नाम लाटिन भाषा में ही है। नक्षत्रों के नाम लाटिन भाषा में इसलिये अभिहित किए जाते रहे है क्योंकि यह भाषा किसी समय ज्ञान-विज्ञान कि भाषा मानी जाती थी। नक्षत्रों की नामावली जो ग्रीक , इजीप्टके लोगो तथा अन्य लोगों द्वारा प्रयुक्त कि जाती रही थी वे सभी लाटिन भाषा में अनुदित की गई थी। इन प्राचीन लोगों द्वारा उनकी सुविधा अनुसार नक्षत्रो के नाम उन प्रतिकों के रूप में दिये गए जैसेकि सितारें एवं नक्षत्रो उन स्वरूपो को धारण करते और टिमटिमाते आकाश में दृष्टिगत होते थे।

प्राचीन इजिप्टयन लोग सूर्य और चंद्र की पूजा करते थे, और अपने धार्मिक कार्यों के लिए उनके प्रथम दर्शन के लिए हमेशा तत्पर रहेते थे। आर्य लोगों को भी खगोलविद्या से कुछ विशेष लगाव था ऐसा उनके प्राचीन वेदो से सिद्ध होता है। वैदिक खगोलविद्या माईथोलोजी से काफी मिलजुल गई है। आकाश को २७ समान तारा पुंजो में विभक्त कर दिया गया था। जिन्हें वे "नक्षत्र" का नाम देते थे। आर्यों के अनुसार पृथ्वी स्थिर है और निराधार उसके चारों ओर आकाशीय पिंड चक्कर काटा करते थे। जैनियों के अनुसार दो सूर्य और दो चंद्रमा थे जो एक दूसरे से १८० अंश के अंतर पर चक्कर काटते थे। यह भी एक असाधारण परंतु एक वैशिष्टपूर्ण विश्वास है।

जैसे-जैसे मानव-ज्ञान बढता गया, वह ब्रम्हखंड का एक संम्पूर्ण इकाई के रूप में अध्ययन शुरु करता गया। ग्रीकों को ज्योजिषशास्त्र में विश्वास था परंतु उन्होंने आकाशीय पिंडों के गतिका विश्लेषण भूमिती के आधारपर करना शुरु कर दिया। केलीपस, अरीस्टोटल, हिपारश आदि ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। प्लोलमी ने उन सभी ज्ञान का का संग्रह किया जो ग्रीको ने खगोलशास्त्र के विषय में कर दिखाया था। उनका अवकाशीय गतिविधि का विश्लेषण, विवरण, को प्लोलेमिक सिस्टम के नाम से जाना जाता है। मध्यकाल में अरबों ने भी खगोलशास्त्र को ज्योतिषशास्त्र के पूरक के रूप में जिंदा रखा। सवाई जयसिंह ने

ने भी भारत में इस विद्या को जिवित रखा।

१७ वी शताब्दी तक खगोलशास्त्र का अध्ययन व्यापक रूप से अवकाशीय पिंडो की माप, उनकी स्थिती तथा उनकी गती की जानकारी, बिना किसी दूरबीन की मदत से सिर्फ आंखो से देख-देख कर की जाती थी। तब ग्रहो के गति के नियम की शोध हुई। दूरबीन (telescope) का आविष्कार हुआ और उसका उपयोग गेलेलियो ने खगोलशास्त्र के अध्ययन में करना शुरु किया। आधुनिक खगोलशास्त्र का अध्ययन गेलेलियो , केप्लर और न्युटन से अत्यधिक प्रभावित है। इस में दो राय नहीं कि गेलेलियो ही अर्वनीय खगोलशास्त्र के जनक है। केप्लर की खोजों ने तथा गेलेलियो के प्रायोगिक प्रयोगों ने "ब्रम्हांड के मेकेनिकल थियरी" की आधार शिला रखी। "

१८ वी शताब्दी में "मंदाकिनी की रचना जो की पृथ्वी एवं ब्रम्हाड से संलग्न है।" यह विचारधारा सर्व प्रथम अनेकानेक निरीक्षण के बाद सामने लाई गई। १९ वी शताब्दी में दो आधारभुत क्रांतिकारी तकनीक-रंगपटलशास्त्र (spectroscopy) और फोटोग्राफी का आविष्कार हुआ। इन दोनो तकनीकों ने प्रकाश की परिणामकता और गुणात्मकता के मापन में एक नई और विस्तृत दिशा दी। फोटोग्राफी का आविष्कार और इसमें तकनीकी विकास ने खगोलशास्त्र के अध्ययन में एक शक्तिशाली नई पद्धती को जन्म दिया। नवीन खगोलभौतिकशास्त्र के लिए फोटोग्राफी की विकसित तकनीक एक वरदान सिद्ध हुई। कुछ वर्ष पूर्व खगोलशास्त्र की एक नई शाखा ने जन्म लिया। जिसमें नवीन तकनीक और अनेक संभावनाये हैं। वह शाखा है "रेडियो खगोलशास्त्र (Radio Astronomy) रेडियो दूरबीन का निर्माण किया जा रहा है। खगोलशास्त्र में एक नया युग शुरु हुआ, और खगोलशास्त्र इस कदर फल फूल रहा है जैसा कि, पहले कभी नही हुआ। अनिर्धारित तत्वों जैसे की क्वासार (Quasars) और पल्सार (Pulsars) की खोज संभवित हुई। ब्रम्हांडके उद्गम की समस्याओं का उत्तर खोजने की नवीन आशा पैदा हुई।

मानव ने ब्रम्हांड के बारे में एक विस्तृत ज्ञान का कोष बना लिया है। इस क्षेत्र में विज्ञान की देन बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि यह अति आधुनिक है। यह वैज्ञानिक देन इसलिए अहम है क्योंकि इतने अल्पकाल में विज्ञान ने सामान्य मान्य विश्वासों को उठा फेंका और उनमें से बहुतों ने सुधार ला दिया है। उदाहरणार्थ - कि सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है, यह विश्वास बदल चुका है। यह कहना उचित ही होगा कि यदि माइथोलोजी ने विज्ञान के लिए पूर्व तैयारी न की होती तो विज्ञान की शुरुआत ही न हुई होती। हम देखते हैं कि कुछ सामान्य वैज्ञानिक नियमों मे मिथक का प्रभाव विद्यमान है।

निःसंदेह आदिम मानव सितारों और ग्रहों के प्रति सचेत रहा करते थे। वे इन आकाशीय पिंडों का निरीक्षण करते थे और परखते थे। यही उन पिंडो के मापन की पद्धति की शुरुआत बनी। आश्चर्यजनक परिणामों की प्रक्रिया को

निर्देशित किया है और नजाने इसका अंत कहा होगा यह भी हमें अभी मालूम नहीं है। हमने प्रारंभिक निरीक्षणों एवं मापको सामान्य तर्क के आधार पर ~~=====~~ विश्लेषण करने का प्रयत्न किया है। हमने सिद्धातों का सहारा लेकर आगत निरीक्षणो के साथ तुलनात्मक भविष्यवाणियां की है। हमने अनेक विभिन्नताओं को जाना है। इन विभिन्नताओं की व्याख्या करके हमने अधिक प्रामाणिक, औचित्यपूर्ण तथा सबल सिद्धातों को विकसित किया है। संक्षेप में ब्रम्हांड के दर्शनने विज्ञान के जन्म को प्रथम विज्ञान को दिशा दी थी। अन्य विज्ञान की तुलना में खगोलशास्त्र की कुछ सीमाएं हैं। " उल्काओं " के अतिरिक्त चंद्र और निकटीय ग्रहों के अलावा दूसरे तत्वों का अध्ययन दुर्गम है, तथा पहुंच के परे हैं। यद्यपि प्रकृति कभी-कभी कुछ खास दशाओं को उद्भवित करती है, जैसे की "ग्रहण" पुच्छलतारा" तथा अन्य अस्थायी प्रभाव। खगोलशास्त्रीयों साधारणतया अपने को आकाशीय पिंडो द्वारा अद्भुत प्रकाश के अध्ययन तक सीमित रखते हैं।

भविष्य के गर्भ में कुछ भी हो परंतु एक बात निश्चित है कि जितना ही आप प्रकृति की शोध एवं खोज करेंगे उतनही ही आप ब्रम्हांड के गर्भ में समाते जायेंगे तथा युग के अतीत में झाकते जायेंगे। तब आप को एक अनुभूति होगी कि ब्रम्हांड मे "नियमन" है। यहां एक "प्रबुद्धता" है अथवा "ईश्वर" जैसी एक शक्ति है जोकि इस संपूर्ण ब्रम्हांड को नियमित करती है। जब तक मानव इस प्रश्न का उत्तर नहीं पा सकता कि इस ब्रम्हांड का "नियामक " कौन है ? मिथ्य की रचनाये चलती रहेंगी, और विज्ञान उन्हे उठा-उठा कर फेंकता रहेगा। मिथ्य को अमान्य करने के सिलसिले में खगोलशास्त्र सर्वथा नवीन बना रहेगा क्योंकि खगोलशास्त्रीयों केवल सितारों के निरीक्षक ही नहीं हैं। वे स्तंभस्वरूप हैं। वह वे मानवें हैं जो मानवीय ज्ञान के आरंभीक रेखापर खडे हैं, यह समय ही बता सकेगा कि वे विस्तृत अवकाश में से क्या और कब एक करीश्मा और क्रांतिकारी सत्य हमारे सामने ला खडा करेंगे ? क्या अब यह देखना सुखद आश्चर्य होगा कि, हमारे सामने दूसरा अध्याय कहां से शुरु होता है। ?

------- निलेश हरेन्द्र वायडा।

निर्देशित किया है और नजाने इसका अंत कहा होगा यह भी हमें अभी मालूम नहीं है। हमने प्रारंभिक निरीक्षणों एवं मापको सामान्य तर्क के आधार पर विश्लेषण करने का प्रयत्न किया है। हमने सिद्धातों का सहारा लेकर आगत निरीक्षणो के साथ तुलनात्मक भविष्यवाणियां की है। हमने अनेक विभिन्नताओं को जाना है। इन विभिन्नताओं की व्याख्या करके हमने अधिक प्रामाणिक , औचित्यपुर्ण तथा सबल सिद्धातों को विकसित किया है। संक्षिप में ब्रम्हांड के दर्शनने विज्ञान के जन्म को प्रथम विज्ञान को दिशा दी थी। अन्य विज्ञान की तुलना में खगोलशास्त्र की कुछ सीमाएं हैं। " उल्काओं " के अतिरिक्त चंद्र और निकटीय ग्रहों के अलावा दूसरे तत्वों का अध्ययन दुर्गम है, तथा पहुंच के परे हैं। यद्यपि प्रकृति कभी-कभी कुछ खास दशाओं को उद्भवित करती है, जैसे की "ग्रहण" पुच्छलतारा" तथा अन्य अस्थायी प्रभाव। खगोलशास्त्रीयों साधारणतया अपने को आकाशीय पिंडो द्वारा उद्भूत प्रकाश के अध्ययन तक सीमित रखते हैं।

भविष्य के गर्भ में कुछ भी हो परंतु एक बात निश्चित है कि जितना ही आप प्रकृति की शोध एवं खोज करेंगे उतनही ही आप ब्रम्हांड के गहन में समाते जायेंगे तथा युग के अतीत में झाकते जायेंगे। तब आप को एक अनुभूति होगी कि ब्रम्हांड मे "नियमन" है। यहां एक "प्रबुद्धता" है अथवा "ईश्वर" जैसी एक शक्ति है जोकि इस संपूर्ण ब्रम्हांड को नियमित करती है। जब तक मानव इस प्रश्न का उत्तर नहीं पा सकता कि इस ब्रम्हांड का "नियामक " कौन है ? मिथक की रचनाये चलती रहेंगी, और विज्ञान उन्हे उठा-उठा कर फेंकता रहेगा। मिथक को अमान्य करने के सिलसिले में खगोलशास्त्र सर्वथा नवीन बना रहेगा क्योंकि खगोलशास्त्रीयों केवल सितारों के निरीक्षक ही नहीं हैं। वे स्वप्नस्वप्न हैं। वह वे मानवें हैं जो मानवीय ज्ञान के आरंभिक रेखापर खडे हैं, यह समय ही बता सकेगा कि वे विस्तृत अवकाश में से क्या और कब एक करीश्मा और क्रांतिकारी सत्य हमारे सामने ला खडा करेंगे ? अब यह देखना सुखद आश्चर्य होगा कि, हमारे सामने दूसरा अध्याय कहां से शुरु होता है। ?

------- निलेश हरेन्द्र वायडा।